❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर
MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 नवम्बर, 2023 से रविवार 3 दिसम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि का 200वां जन्मोत्सव : एतिहासिक कार्यों का स्मरणोत्सव

19वीं सदी के महामानव - महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषि मुनियों की पुण्य भूमि भारत में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का बहुआयामी व्यक्तित्व अनुपम, अद्वितीय और विशाल था। मानव समाज के ऊपर उनके अनगिनत उपकार स्तुत्य एवं चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेंगे। 12 फरवरी सन 18 24 में टंकारा गुजरात में जन्मे महर्षि का संपूर्ण जीवन व्रत मानव समाज के सर्वागीण विकास और उत्थान के लिए समर्पित रहा। उनके जीवन दर्शन के मूल्य सिद्धांतों को देखकर ज्ञात होता है कि उनकी निजी आवश्यकताएं तो नाम मात्र की थी, एक कोपीन धारण करके भी वे अपने जीवन में संतुष्ट और आनंदित थे। न किसी भव्य भवन में निवास करने की भावना और न किसी प्रकार के धन धान्य की कामना, केवल उनकी यही महत्वाकांक्षा थी की संपूर्ण विश्व में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो, वैदिक शिक्षाओं के अनुसार सब अपना जीवन यापन करें, सारा मानव समाज वेद का अनुयाई बने, समस्त भूमंडल पर आर्य साम्राज्य की स्थापना हो, मनुष्य मात्र भय, भ्रम, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास से ऊपर उठकर शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक स्तर पर सबल बनें, सब उन्नति, प्रगति और सफलता प्राप्त करें, सारा संसार आर्य बने, सभी के भीतर अभयता, संयम और सदाचार का समन्वय हो, सभी सत्य

- शेष पृष्ठ 3-6 पर

धन्य है टंकारा की वह पावन धरा, जहाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जन्म लिया, धन्य हैं वे माता-पिता जिन्होंने महर्षि को जन्म दिया और बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक पालन पोषण किया, धन्य थे वे सभी लोग जिन्होंने महर्षि के बाल्यकाल में दर्शन किए, धन्य थे गुरु विरजानंद दंडी जिन्हें महर्षि जैसा युगप्रवर्तक शिष्य मिला, धन्य थे हमारे पूर्वज महापुरुष जिन्होंने महर्षि के चरणों में बैठकर शिक्षा और मानव कल्याण की प्रेरणा प्राप्त की और धन्य थे आर्य समाज के वे हमारे अग्रज जिन्होंने महर्षि की 100वीं, 150वीं जन्म जयन्ती मनाकर, उनके अदभुत और अनुपम सेवाकार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर, उनकी सत्य कीर्ति का यशोगान गाकर, उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को धन्य किया।

अब यह महान अवसर हमारे सामने है, आईए, हम सब महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव में सम्मिलित होकर जीवन को धन्य बनाएं, 10-11-12 फरवरी 2024 को मिलकर आओ, चलें टंकारा, महर्षि के लोकोपकारी महान व्यक्तित्व का करें गुणगान, जिनका ऋणी है सारा जहान.......

आओ चलें टंकारा - सम्पूर्ण विश्व में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा - आओ चलें टंकारा

10-11-12 फरवरी, 2024 तदनुसार माघ शुक्ल 1-2-3 विक्रमी 2080 (शनि-रवि-सोम)

महर्षि दयानन्द का 200वां जन्मोत्सव - स्मरणोत्सव समारोह

स्थान : ऋषि जन्मभूमि टंकारा, जिला-राजकोट (गुजरात)

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी को भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। महर्षि की 200वीं जयन्ती आर्य समाज की एक नई क्रांति होगी। महर्षि का 200वां जन्मोत्सव उनके जीवन एवं कार्यों का स्मरणोत्सव होगा। इस अवसर पर महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में आयोजित स्मरणोत्सव में जाना सौभाग्य होगा हमारा। इसलिए 10-11-12 फरवरी की पावन तिथियां को टंकारा में मिलकर खुशियां मनाएं। समस्त आर्य संस्थाओं को लाइटिंग से सजाएं-महर्षि के जीवन, कार्यों, शिक्षा और संदेशों का जन-जन तक पहुंचाएं। आओ, टंकारा चलें, चलो टंकारा चलें।

विशेष निवेदन :-समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों के माननीय अधिकारियों से अनुरोध है कि -

1. **आयोजन की उपरोक्त तिथियों - 10-11-12 फरवरी में अपनी आर्यसमाज/संस्थान का कोई भी आयोजन न रखें।**
2. **अपने समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के साथ सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें।**
3. **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह को सफल बनाने में अपनी अहम् भूमिका निभाएं।**

निवेदक : ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर-कमलों से दिल्ली में स्थापित प्रथम आर्यसमाज आर्यसमाज देहली (चावड़ी बाजार) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

यह सर्वविदित है कि भारत की राजधानी दिल्ली में राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण कार्यों के प्रति समर्पित विभिन्न आर्य समाजों का अपना मुख्य स्थान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा और आर्य जगत के महापुरुषों के तप साधना के परिणाम स्वरूप दिल्ली में विभिन्न क्षेत्रों में सैकड़ों आर्यसमाज निरंतर सेवा के कीर्तिमान स्थापित कर रही है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 145 वर्ष पुरानी आर्य समाज चावड़ी बाज़ार का वार्षिकोत्सव पिछले दिनों पूरे उमंग, उत्साह और उल्लास से सम्पन्न हुआ। जिसमें दिल्ली सभा के संवर्धकों ने प्रतिदिन यज्ञ, भजन और प्रवचन किए। इस अवसर पर विशेष लंगर के आयोजनों में अहम भूमिका निभाई। बाजार में भोजन वितरित किया गया, सभी क्षेत्रीय दुकानदारों ने पूरे कार्यक्रम की अत्यंत प्रशंसा की और समय समय पर ऐसे कार्यक्रमों को करने के लिए आग्रह किया।

- विनीत बहल, मन्त्री

देववाणी-संस्कृत

परम जातवेदा मुझे श्रद्धा और मेधा देवे

वेद-स्वाध्याय

अग्ने समिधमाहार्ष बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु।। -अथर्व. १९/६४/1
ऋषिः-ब्रह्मा।। देवता-अग्निः।। छन्दः-अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - **अग्ने**=हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! **बृहते**=बहुत बड़े, परम **जातवेदसे**=जातमात्र के जाननेवाले, ज्ञानयुक्त आपके लिए मैं **समिधम्**=समिधा को, प्रदीपनीय वस्तु को **आहार्षम्**=आहरण करता हूँ, लाता हूँ। **सः**=वह **जातवेदाः**=ज्ञानयुक्त अग्नि **मे**=मुझे **श्रद्धां च**=श्रद्धा को भी और **मेधां च**=मेधा को भी **प्रयच्छतु**=प्रदान करे।

विनय- जब समिधा अग्नि में डाली जाती है तो वह जल उठती है, अग्निरूप हो जाती है, समिधा में छिपी अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है, प्रदीप्त अवस्था में आ जाती है। इसीलिए वैदिक काल के जिज्ञासु लोग समित्पाणि होकर (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के पास आया करते थे, अपने को समिधा बनाकर गुरु के लिए अर्पित कर देते थे, जिससे कि वे अपने गुरु की अग्नि से प्रदीप्त हो जावें। उस वैदिक विधि के अनुसार मैं भी अपने आचार्य के चरणों में उपस्थित हुआ हूँ और उनकी अग्नि द्वारा उन-जैसा प्रदीप्त होना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि प्रदीप्त हो जाना बड़ा कठिन है। प्रदीप्त होने से पहले अपने को जला देना होता है और यह अपने को जला देना तभी किया जा सकता है जब मुझमें पूर्ण श्रद्धा हो कि इस जलने द्वारा मैं अवश्य प्रदीप्त व ज्ञानमय हो जाऊँगा। इसलिए पहले तो मुझमें श्रद्धा की आवश्यकता है। इसी प्रकार गीली होने आदि किसी दोष के कारण यदि समिधा अग्नि को धारण न करे, तो भी वह प्रदीप्त नहीं हो सकती। इसलिए मुझमें ज्ञान के धारण करनेवाली बुद्धि, मेधा की भी आवश्यकता है। श्रद्धा और मेधा के बिना मैं कभी ज्ञान से दीप्त नहीं हो सकता, पर इस श्रद्धा और मेधा को मैं और कहाँ से लाऊँ? मैं तो इन 'जातवेदाः' अग्नि से, अपने आचार्यदेव से ही प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे श्रद्धा और मेधा का दान प्रदान करें। वे जातवेदा हैं, उन्हें ज्ञान हो चुका है, वे ज्ञान की जलती हुई अग्नि हैं, अतः वे 'जातवेदा' यदि चाहें तो मुझे श्रद्धा और मेधा भी दे सकते हैं।

अन्त में मैं प्रातः-सायं भौतिक अग्नि के लिए अपनी जो काष्ठ की समिधा लाता हूँ, शिष्यरूप में आचार्याग्नि के लिए अपने शरीर-मन-आत्मा के प्रदीपनार्थ जो तीन समिधाएँ प्रतिदिन लाता हूँ, राष्ट्रसेवक या धर्मसेवक बनकर राष्ट्राग्नि या धर्माग्नि आदि के लिए जो तदुपयोगी समिधाएँ लाता हूँ, ये सब-की-सब समिधाएँ अन्त में उस 'बृहत् जातवेदाः' के लिए, उस सब-कुछ जाननेवाले महान् अग्नि के लिए लाता हूँ जो सब आचार्यों का आचार्य है, सब अग्नियों का अग्नि है, परम-परम अग्नि है और अन्त में उसी 'बृहत् जातवेदाः' से श्रद्धा और मेधा की याचना करता हूँ जोकि परम श्रद्धामय है और मेधा का भण्डार है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भारतीय वैदिक ऋषियों में अनुचित बताए हैं समान गौत्र/रक्त सम्बन्धी विवाह

रक्त सम्बन्धी विवाह पर मुस्लिम देशों में बवाल

यह साल 2016 था और महीना था, जुलाई का, जगह थी चीन, अफगानिस्तान, किर्गिस्तान और उज्बेकिस्तान के बीचों-बीच बसा मध्य एशिया का सबसे गरीब मुस्लिम देश है ताजिकिस्तान। ऐसा दुर्लभ ही होता है कि इस देश की कोई घटना सारी दुनिया में चर्चा का विषय बन जाए। लेकिन उस दौरान यहां की संसद का एक फैसला अंतर्राष्ट्रीय सुर्खियों में शामिल हुआ। यह फैसला था देश में कॉन्सेंग्युनियस विवाह यानि (रक्त सम्बन्धी विवाह) पर प्रतिबंध लगाना। जोकि मुस्लिम देशों में या मुस्लिम समाज में एक आम बात है ममेरी, फुफेरी, चचेरी बहन-भाइयों का निकाह होना या उससे भी निकट रक्त संबंधी से निकाह करना। इसीलिए जब मुस्लिम बहुल ताजिकिस्तान ने इस प्रथा पर रोक लगाने का प्रगतिशील फैसला लिया तो इसने दुनिया भर के कई लोगों को हैरत में डाल दिया।

इससे अनेकों मुस्लिम देशों के मुल्ला-मौलाना नाराज हो चले, लेकिन चिकित्सा विज्ञान को समझने वाले जानकार सामने आये बोले और कॉन्सेंग्युनियस निकाह को मजहबी नजरिए से नहीं बल्कि आधुनिक नजरिए से देखा परखा जाना चाहिए।

अब इस पर दुनिया के अन्य देशों को छोड़ दिया जाये तो सबसे अधिक हलचल मची पाकिस्तान के अन्दर, क्योंकि पाकिस्तान के अन्दर तो 75 फीसदी पाकिस्तानी अपने घर-परिवार में ही निकाह करते हैं। यानि भाई ही अपनी बहनों के पति हैं और पाकिस्तान में इस तरह भाई-बहनों के बीच निकाह होना कोई बडी बात नहीं है। ये बहनें चाचा, मामा आदि की बेटियां होती हैं।

दरअसल ताजिकिस्तान ने यह फैसला लेते हुए माना है कि रक्त सम्बन्धी विवाह से पैदा होने वाले बच्चों में आनुवंशिक रोग होने की संभावनाएं ज्यादा होती हैं। यहां के स्वास्थ्य विभाग ने 25 हजार से ज्यादा बीमार कमजोर रोगी बच्चों की बीमारी का अध्ययन करने के बाद बताया कि इनमें से लगभग 35 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो रक्त सम्बधी विवाह से पैदा हुए हैं। यानि ताजिकिस्तान में डॉक्टर्स ने साफ कर दिया कि रक्त सम्बन्धी विवाह से पैदा होने वाले बच्चों में आनुवंशिक रोग होते रहते हैं लेकिन यह चर्चा कभी भी इतने व्यापक स्तर पर नहीं हुई कि इस तरह के निकाह पर प्रतिबंध लग सके।

हालाँकि कई देश ऐसे भी हैं जहां रक्त सम्बन्धी विवाह पर पूरी तरह प्रतिबंध तो नहीं है लेकिन, यह आंशिक रूप से प्रतिबन्धित हैं। उदाहरण के लिए कई अमरीकी राज्यों में रक्त सम्बन्धी विवाह की अनुमति सिर्फ उन्हीं लोगों को दी जाती है जिनकी उम्र 65 वर्ष से अधिक हो या जो बच्चे पैदा करने में असमर्थ हों। इसी तरह कुछ देश ऐसे भी हैं जहां सिर्फ चिकित्सकीय जांच के बाद ही रक्त सम्बन्धी विवाह की अनुमति दी जाती है। जानकारों का मानना है कि इन सभी देशों में इस तरह के प्रतिबंध सिर्फ इसीलिए लगाए गए हैं ताकि बच्चों में होने वाले आनुवंशिक रोगों को रोका जा सके।

अब भले ही पाकिस्तानी मुफ़्ती इसे इस्लाम का अभिन्न हिस्सा बता रहा हो, लेकिन आंकड़ें तो कुछ और ही कह रहे हैं। दरअसल ब्रिटेन में पैदा होने वाले बच्चों में पाकिस्तानी मूल के कुल तीन प्रतिशत बच्चे होते हैं। लेकिन आनुवंशिक रोग के पीड़ित ब्रिटेन के कुल बच्चों में से 13 प्रतिशत पाकिस्तानी मूल के ही हैं।

दि गार्जियन की एक रिपोर्ट बताती है कि ब्रैडफोर्ड कुल आबादी में लगभग 17 प्रतिशत आबादी पाकिस्तानी मुस्लिम लोगों की है। इन लोगों में से 75 प्रतिशत लोग अपने ही समुदाय में चचेरे/ममेरे भाई/बहनों से शादियां करते हैं। अध्ययन में सामने आया था कि यहां रहने वाले बच्चों में से कई आनुवंशिक रोगों का शिकार हैं और इसका मुख्य कारण रक्त सम्बन्धी विवाह ही है।

'जब भी कोई व्यक्ति अपने रक्त सम्बन्धियों से शादी करता है तो उनके कई जीन एक समान होते हैं। इस स्थिति में यदि उनके जीन में कोई विकार होता है तो उनके होने वाले बच्चे में ऐसे विकृत जीन की दो प्रतियां पहुंच जाती हैं। यही रोग का कारण बनता है, जबकि समुदाय से बाहर शादी होने पर जीन का दायरा बढ़ जाता है और इसलिए किसी विकृत जीन के बच्चों तक पहुंचने की संभावनाएं काफी कम हो जाती हैं।'.... एक ही परिवार, गोत्र में विवाह भारतीय हिन्दू संस्कृति में हमेशा एक विवाद का विषय रहा है, अंग्रेजी और उर्दू-अरबी दिमाग से सनी मीडिया इसे प्रेम पर पहरा व खाप के फरमान के तौर पर पेश करता है। जिस कारण आज नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच टकराव का कारण बना है। जबकि सामाजिक और वैदिक दृष्टि से सगोत्र एवं रक्त सम्बन्धी विवाह अनुचित है, हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अनेकों जगह आज भी केवल माता-पिता ही नहीं अगर दादी भी एक गोत्र की है तो भी विवाह नहीं होते।

ऐसा नहीं है कि यह शोध केवल ब्रिटेन के ब्रैडफोर्ड में ही हुआ आंध्र प्रदेश की रहने वाली बिन्दु शॉ ने भी इस विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय से शोध किया, हालाँकि हमारे ऋषि मुनियों को छोड़ दें तो भारत में अब तक ऐसे शोध न के बराबर ही हुए हैं। जिनमें रक्त सम्बन्धी विवाह और उनके कारण होने वाले आनुवंशिक रोगों को साथ में परखा गया हो। तो रक्त सम्बन्धी विवाह पर शोध करने वाली बिन्दु शायद पहली भारतीय ही हैं। बिन्दु ने दो सौ ऐसे परिवारों पर अध्ययन किया तो अध्ययन में सामने आया कि जिन्होंने रक्त सम्बन्धी विवाह किया था, इनमें से 97 परिवारों के बच्चे आनुवंशिक रोग से पीड़ित पाए गये थे। - ***शेष पृष्ठ 3 पर***

प्रथम पृष्ठ का शेष

19वीं सदी के महामानव - महर्षि दयानन्द

सनातन वैदिकधर्मी बनकर सुख, शांति, समृद्धि की अभिवृद्धि करें।

वेदों के प्रकांड विद्वान, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि की सरलता सहजता तो देखिए उन्होंने लोकोपकार के लिए वेदों पर आधारित 3 दर्जन से अधिक ग्रंथों की रचनाएं की। जिनमें कालजई अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, गोकरुणा निधि इत्यादि प्रमुख हैं, मानव समाज को सुदिशा देने हेतु आपने हजारों प्रवचन किए, अनेकों शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की। किंतु फिर भी आपने कहा कि अगर मेरे कथनों और ग्रंथों में किसी को कहीं त्रुटि या भूल प्रतीत हो तो मुझे सौहार्द के साथ सुझाए, मैं अनुकूलता के साथ उस पर विचार करूंगा और वैसा ही उन्होंने किया, इससे आगे भी महर्षि ने कहा कि मेरे कथनों और ग्रंथों में जो-जो बातें वेद अनुकूल हैं उन्हीं को तुम ग्रहण करना और यदि कहीं कोई बात वेदानुकूल न लगे तो उसका परित्याग करना। उन्होंने जो कुछ कहा और जो कुछ लिखा वह केवल वेदों के रहस्यों को समझाने के लिए कहा और लिखा, उन्होंने अपने प्रवचनों और लेखों से कोई बात वेद के विरुद्ध नहीं कही। सत्य पर अडिग महर्षि दयानंद ने कहा था कि विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुना चमकती है। दयानंद को यदि कोई तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है तब भी उसके मुंह से वेद की श्रुति ही निकलेगी। ऐसे निर्भीक महान संन्यासी सा उदार हृदय संसार में कोई अन्य नजर नहीं आता। एक तरफ उनका वेदों के प्रति अटूट विश्वास, अद्भुत आत्मबल, दूसरी तरफ़ दयालुतापूर्ण उदारता, सरलता सहजता। आधुनिक परिवेश में अगर देखा जाए तो कोई भी वक्ता, लेखक, चिंतक अपनी कही हुई बात को मनवाने के लिए आग्रह और दुराग्रह करने से भी पीछे नहीं हटता लेकिन महर्षि एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने प्रत्येक शब्द को प्रमाण तथा कसौटी पर कसे जाने की पूरी छूट और अपने से असहमत होने का सबको पूरा अधिकार दिया। महर्षि के जीवन में कहीं पर भी अहम भाव के दर्शन नहीं होते, उन्होंने संसार का इतना बड़ा उपकार किया की स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा और वृद्ध हर आयु वर्ग को उन्होंने जीवन जीने की कला सिखाई।

कल्याण की राह दिखाई, लेकिन किसी संस्था का नामकरण अपने नाम पर नहीं होने दिया और न ही कोई शिष्य अथवा शिष्या बनाकर उनके ऊपर अपने नाम की मोहर लगाई, उनकी तो एक ही वसीयत थी कि मेरी देह की अस्थियों को राख सहित किसी अज्ञात खेत में फेंक देना ताकि संसार मेरी कोई निशानी न ढूंढ पाए और मेरी पूजा न होने लग जाए। एक बार किसी ने महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रश्न किया कि क्या आप विद्वान हैं या अविद्वान हैं, महर्षि ने सीधा सरल उत्तर दिया कि मैं विद्वान भी हूं और अविद्वान भी हूं। जिन-जिन विषयों की मुझे जानकारी नहीं है उनमें मैं अविद्वान हूं जिन जिन विषयों की मुझे जानकारी है उनमें मैं विद्वान हूं। आज अगर किसी से कोई पूछे कि आप इस विषय में जानते हैं तो आदमी ना जानते हुए भी अपनी योग्यता का बखान करने लगता है। इससे पता चलता है कि महर्षि सत्य ही करते थे, सत्य ही बोलते थे और सत्यमय जीवन ही जीते थे, ऐसे महापुरुष के महान कार्यों के विषय में योगी अरविंद ने लेखमाला लिखी थी, तब उन्होंने महर्षि दयानंद के नाम के साथ कोई ऋषि, मुनि, योगी आदि विशेषण नहीं लगाया, उनसे जब किसी ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं जब-जब दयानंद के नाम के साथ कोई विशेषण का प्रयोग करता हूं तो मुझे बड़ा अजीब लगता है, क्योंकि ऋषि दयानंद का नाम अपने आपमें पूर्ण है, इसके साथ कोई उपनाम लगाने से उनके नाम का अपमान है। वास्तव में संसार में ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधक, सन्त, महात्मा, योगी तो अनेकानेक हुए हैं और आगे भी होंगे लेकिन दयानंद सा महर्षि होना बडी बात है। महर्षि का जैसा नाम है वैसा ही उनका कार्य सिद्ध हुआ, महर्षि दयानंद महान दयालु, कृपालु और धर्मात्मा थे।

महर्षि दयानंद सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका ने लिखते हैं कि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतो में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बरतें और बरतावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। महर्षि के इस संदेश में संपूर्ण जगत के कल्याण की भावना निहित है, उनका मानना था कि जो प्रचलित मत हैं, संप्रदाय हैं उनमें भी विद्वान हैं और उन मतों में भी सर्वतंत्र सिद्धांत हैं, उनकी धारणा थी कि जो जो बातें सब मतो में एक दूसरे के अनुकूल और समान हैं उनका विद्वान प्रचार करें और जो-जो बातें प्रतिकूल तथा विरुद्ध हैं उनका प्रचार न किया जाए। महर्षि दयानंद सरस्वती का किसी से कभी कोई द्वेष भाव नहीं था, उन्हें तो असत्य से घृणा थी क्योंकि वे हमेशा मनुष्य मात्र के हितैषी पक्षधर थे, इसलिए महर्षि के मानने वालों

- *शेष पृष्ठ 6 पर*

पृष्ठ 2 का शेष

रक्त सम्बन्धी विवाह पर मुस्लिम देशों में बवाल

बिन्दु ने अपने शोध में बताया कि 'जब भी कोई व्यक्ति अपने रक्त सम्बन्धियों से शादी करता है तो उनके कई जीन एक समान होते हैं। इस स्थिति में यदि उनके जीन में कोई विकार होता है तो उनके होने वाले बच्चे में ऐसे विकृत जीन की दो प्रतियां पहुंच जाती हैं। यही रोग का कारण बनता है, जबकि समुदाय से बाहर शादी होने पर जीन का दायरा बढ़ जाता है और इसलिए किसी विकृत जीन के बच्चों तक पहुंचने की संभावनाएं काफी कम हो जाती हैं।'

उस दौरान ताजिकिस्तान ने फैसला लेते हुए कुरआन का फरमान ठुकराया तो इस फैसले का विरोध करने वाले मुल्ला खड़े हो गये। उनकी मांग थी कि या तो यह फैसला वापिस लिया जाये या फिर इस तथ्य की पुष्टि के लिए अधिक से अधिक आंकड़े प्रस्तुत किये जाएं। जब ताजीकिस्तान में यह विवाद जोरों पर था उसी दौरान बीबीसी पर एक पाकिस्तानी लड़की की डॉक्यूमेनटरी आई थी, नाम था 'शुड आई मेरी माय कजिन' (क्या मुझे अपने कज़न से शादी करनी चाहिए?)

इसमें एक ऐसी ब्रिटिश पाकिस्तानी लड़की की कहानी है जो अपनी शादी को लेकर ऊहापोह में है। वह इस सवाल से जूझती है कि क्या कज़न से शादी करनी चाहिए? वो कहती है मैं हिबा हूं। 18 साल की ब्रितानी पाकिस्तानी लड़की। किसी भी युवा लड़की की तरह मैंने भी शादी के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। लेकिन मेरे आसपास रहने वाले ब्रितानी-पाकिस्तानी 70 फ़ीसदी युवा अपने चचेरे भाई-बहनों में शादी करते हैं। इनमें मेरे दादा-दादी भी शामिल हैं लेकिन क्या अगर मैं ऐसा करने से इनकार कर दूं तो क्या ये मेरा पागलपन होगा या मुझे इस परंपरा से छुटकारा पा लेना चाहिए?

दरअसल हिबा की यह कहानी उन पाकिस्तानी सेलेब्रिटीज को आइना दिखा रही थी। जिसमें पाकिस्तानी एक्टर बाबर ख़ान ने 2015 में अपनी कज़िन बिस्मा ख़ान से शादी की, जो 9वीं क्लास में पढ़ रही थी। गायक नुसरत फतेह अली ख़ां ने अपनी चचेरी बहन नाहिद से शादी की थी। पाक क्रिकेटर सईद अनवर ने कज़िन सिस्टर लुबना से शादी की है। क्रिकेटर शाहिद आफ़रीदी ने भी चचेरी बहन से शादी की है। और ना जाने कितने नाम है क्योंकि उसी दौरान खबर भी खूब चली थी कि 75 प्रतिशत पाकिस्तानी अपने घर परिवार में ही शादी करते हैं। लेकिन इसके बाद पाकिस्तान से ये भी खबर आ थी कि भाई-बहनों से शादी के कारण पाकिस्तान में जो नये बच्चे पैदा हो रहे हैं वो अजीब बीमारियों का शिकार हैं।

पाकिस्तान की अधिकांश आबादी इस तथ्य से अवगत नहीं है। जबकि कई अध्ययनों से जमा किए गए आंकड़ों का प्रतिपादन करते हुए, यह देखा गया है कि चचेरे भाई-बहनों के विवाह से उत्पन्न संतानों में से 11 प्रतिशत ऑटोसोमल रिसेसिव विकार प्रदर्शित किए, करीब 12 प्रतिशत ने गैर-विशिष्ट गंभीर बौद्धिक हानि दिखाई, 16 प्रतिशत ने जन्मजात विकृतियाँ प्रदर्शित कीं और 14.6 प्रतिशत ने हल्की बौद्धिक हानि प्रदर्शित की।

इसके बाद जर्मनी के समाचार दि डब्ल्यू न्यूज़ ने भी पाकिस्तान के उन लोगों पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की। जो निकाह की इस परंपरा से बंधे हुए हैं। इस इंटरव्यू में लोगों ने अपने निजी अनुभव बांटे हैं और बताया कि उनके परिवारों ना जाने कहाँ से अजीब-अजीब बीमारियाँ घर कर रही हैं जिसमें हेपेटाइटिस और तपेदिक तो आम बात है।

जब यह खबर बनी तो यूरोप के कई देशों में रक्त सम्बन्धी आपसी विवाह पर रोक लगा दी थी। आज भले ही पाकिस्तानी मौलाना खूब तर्क दे रहे हो वो इसके फायदे बता रहे हो, लेकिन यह सब शोध लाखों करोड़ो साल पहले हो चुके है। वेदों में हमारे ऋषि-मुनि सृष्टि के आदि में ही लिख गये थे। ऋग्वेद में कहा है - 'संलक्षमा यदा विशु रूपा भवति' अर्थात सहोदर बहिन से पीड़ाप्रदय संतान उत्पन्न होने को सम्भावना होती है।

दूसरा एक ही परिवार, गोत्र में विवाह भारतीय हिन्दू संस्कृति में हमेशा एक विवाद का विषय रहा है, अंग्रेजी और उर्दू-अरबी दिमाग से सनी मीडिया इसे प्रेम पर पहरा व खाप के फरमान के तौर पर पेश करता है। जिस कारण आज नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच टकराव का कारण बना है। जबकि सामाजिक और वैदिक दृष्टि से सगोत्र एवं रक्त सम्बन्धी विवाह अनुचित है, हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अनेकों जगह आज भी केवल माता-पिता ही नहीं अगर दादी भी एक गोत्र की है तो भी विवाह नहीं होते।

यानि रक्त सम्बन्धी विवाह मतलब खून का सम्बन्ध जितना दूर का होगा संतान उतनी ही वीर, पराक्रमी और निरोगी होगी दूसरे शब्दों में कहें तो पैदा होने वाले बच्चे उतने ही स्वस्थ व बुद्धिमान होंगे। चाइना इस बात को बहुत देर से समझा और 1981 में स्पेशल मैरिज एक्ट लाकर कजिन मैरिज पर प्रतिबंध लगाया। इस एक्ट के आर्टिकल-7 के अनुसार को चीनी शख्स अपने किसी थर्ड कजिन तक से शादी नहीं कर सकता है। आखिर इसके पीछे चीन ने भी तो तर्क गढ़े होंगे, ब्लड रिलेशंस मेरिज क्यों रोक दी।

दरअसल ब्लड रिलेशंस और कजिन रिलेशंस यानि रक्त-सम्बन्ध दो तरह के होते हैं। पहला मैटर्नल यानि मां के पक्ष से और दूसरा पैटर्नल यानि पिता के पक्ष से। जब हम हिन्दी और उर्दू में बात करते हैं तो चचेरा, ममेरा, फुफेरा और मौसेरा भाई-बहन बोलते हैं, लेकिन अंग्रेजी में इन सारे सम्बोधन के लिए एक ही शब्द है। कजिन इस लिहाज से कजिन मैरिज का मतलब ऐसे लोगों के बीच विवाह जो मां या पिता के पक्ष से भाई-बहन लगते हों। - ***सम्पादक***

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

यजुर्वेदीय यज्ञ, भजन, प्रवचन, आर्य महिला सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता एवं नाटिकाओं के मंचन रहे विशेष आकर्षण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज हनुमान रोड द्वारा 23 से 26 नवंबर 2023 तक चार दिवसीय वार्षिक उत्सव सोल्लास संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य इंद्रदेव जी के ब्रह्मत्व प्रात:काल यज्ञ एवं सायंकाल वेदों पर आधारित सारगर्भित प्रवचन संपन्न हुए। यज्ञ में रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल की छात्राओं और उनके अभिभावकों ने सहर्ष भाग लिया।

24 नवंबर को आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती के उपकारों का वर्णन करते हुए समस्त आर्य महिला अधिकारियों, और कार्यकर्ताओं ने महर्षि की देन पर ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता का विषय था – भारत की स्वतंत्रता में महर्षि दयानंद एवं उनके अनुयाइयों का योगदान। इस विषय पर सभी प्रतिभागियों ने एक बढ़कर एक प्रस्तुति दी। निर्णायक मंडल द्वारा किए गए निर्णय के अनुसार प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने विद्यार्थियों को शील्ड और राशि देकर सम्मानित किया गया तथा सभी रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकंडरी स्कूल की छात्राओं द्वारा तीन महत्वपूर्ण नाटिका प्रस्तुत की, जिनका विषय था महर्षि दयानंद की दयालुता, अंधविश्वास निवारण और प्राकृतिक खेती। बच्चों ने इतनी खूबसूरती के साथ ये तीनों नाटिकाओं को प्रस्तुत किया कि उपस्थित जन समुदाय भावविभोर हो गया। आर्य समाज के

भजनोपदेशक आचार्य सुमन शास्त्री के प्रेरक भजन अत्यंत सारगर्भित और मंत्रमुग्ध करने वाले थे। प्रतिदिन यज्ञ में आर्य समाज के सभी अधिकारी कार्यकर्ता और सदस्यों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना की। सायंकालीन प्रवचनों और कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर रघुमल आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओं ने नाटिका भी प्रस्तुत की। 25 नवंबर को विषेष भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली के विभिन्न 15 विद्यालयों से प्रतिभागियों प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। यज्ञ की पूर्णाहुति 26 नवंबर को संपन्न हुई, जिसमें आचार्य वीरेंद विक्रम जी और आचार्य इंद्रदेव जी ने विशेष उद्बोधन दिए। दोनों विद्वानों के प्रेरक प्रवचन अत्यंत लाभान्वित करने वाले थे। अधिकारियों और उपस्थित आर्यजनों ने सभी छात्राओं का उत्साहवर्धन किया और उन्मुक्त मन से प्रशंसा की। आर्य समाज के प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने विद्वानों और उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया। – ***विजय दीक्षित, मन्त्री***

200वीं जयन्ती के अवसर पर आर्यसमाज हरफरी, सम्भल (उ.प्र.) में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

भारत की आजादी को सुरक्षित रखने के लिए हिन्दू समाज को जागृत रहना होगा – विनय आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं स्वामी ब्रह्मानंद जी की प्रथम पुण्यतिथि पर आर्य समाज हरफ़री सम्भल द्वारा आयोजित महासम्मेलन के दूसरे दिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर विनय आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में आर्य समाज के सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को इस भव्य आयोजन और आर्य महासम्मेलन की बधाई दी। अपने विशेष वक्तव्य में आपने बताया कि आर्य समाज का स्वर्णिम इतिहास इतना उज्ज्वल रहा है कि हमारे महापुरुषों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भारत के गौरव को सो अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनेकानेक बलिदान दिए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से लाखों अमर शहीदों ने अपने प्राण देकर आज़ादी प्राप्त की। देश के नव निर्माण में चाहे किसी भी क्षेत्र में देखा जाए आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम आदि अनेक महापुरुषों ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। लेकिन आज फिर से देश के सामने विपरीत परिस्थितियां करवट ले रही हैं। आर्य समाज सदा से हिन्दुओं का रक्षक बनकर अहम भूमिका निभाता रहा है, आज हमें फिर से हिंदू समाज को जागरूक करना होगा। तभी देश की आज़ादी सुरक्षित रहेगी। इस अवसर पर अनेक अन्य आर्य संन्यासी, आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ताओं के वक्तव्य हुए। प्रेम सौहार्द के वातावरण में संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत प्रेरक सिद्ध हुआ। – ***मन्त्री***

200वीं जयन्ती पर 251 गांवों में वैदिक यज्ञ एवं वेद प्रचार यात्रा का शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के आयोजनों की श्रृंखला में ओम योग संस्थान ट्रस्ट पाली फरीदाबाद द्वारा वैदिक यज्ञ एवं वेद प्रचार यात्रा का उद्घाटन समारोह दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर 37वें राष्ट्रीय खेल में स्वर्ण पदक विजेता चिराग याज्ञिक को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम और पुरुषार्थ से भारत का नाम ऊँचा किया है। इस उपलब्धि के लिए आचार्य ओम प्रकाश जी ने विजेता चिराग जी को 21 हज़ार रुपये नकद और पाँच किलो शुद्ध देशी घी एवं अन्य उपहार प्रदान किए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती पर इस वैदिक यज्ञ और वेद प्रचार यात्रा के उद्घाटन समारोह में श्री विपुल गोयल जी, पूर्व कैबिनेट मंत्री, हरियाणा सरकार, श्री योगराज अरोड़ा, चेयरमैन, आरोन ग्रुप, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य ऋषि पाल, योगाचार्य देवराज आर्य, पाली ग्राम के सरपंच चौ. रघुबर प्रधान, चौ. सरदाराम भडाना, चौ. जगदीश भढ़ाना, चौ. कुलदीप भडाना, कैप्टन तेज सिंह भड़ाना आदि ने भी चिराग को आशीर्वाद दिया और इस वेद प्रचार यात्रा को सफल सफल बनाने के लिए संकल्प लिया। इस अवसर पर आचार्य ओम प्रकाश जी ने क्षेत्रीय आर्यजनों को महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों से अवगत कराते हुए उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का संदेश दिया।

– ***मन्त्री***

आर्यसमाज साकेत के 44वें वार्षिकोत्सव पर सामवेद पारायणयज्ञ के साथ सम्पन्न

आर्यसमाज का प्राण है गुरुकुल शिक्षा पद्धति - धर्मपाल आर्य

हमारा मूल सिद्धान्त है वैदिक संस्कृति - जी.डी. बक्शी

आर्य समाज साकेत का 44वां वार्षिकोत्सव एवं नवचेतना शिविर सम्पन्न 20 से 26 नवंबर 2023 तक आर्य समाज साकेत द्वारा सामवेद परायण यज्ञ एवं भजन, प्रवचनों के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर आचार्य वीरेंद्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में गुरुकुल आम सेना ओडिशा की ब्रह्मचारिणीयों के द्वारा वेदपाठ, भजन और वीरेंद्र जी ने उपनिषदों पर सारगर्भित प्रवचन दिए। 26 नवंबर को पूर्णाहुति के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह जी और जनरल जी.डी. बक्शी जी उपस्थित रहे। आर्य समाज साकेत की ओर से श्री धर्मपाल आर्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। सभा प्रधान जी ने आर्यसमाज साकेत के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए इस भव्य आयोजन के लिए सभी अधिकारी, कार्यकर्ताओं को बधाई दी। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल आर्य समाज के प्राण हैं। गुरुकुल हैं तो आर्य समाज है। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने भी अपने उद्बोधन में प्राचीन प्रचार कार्य का वर्णन किया। जनरल जी.डी. बक्शी जी की उपस्थिति में आर्यसमाज साकेत की ओर से 3 विद्वानों सर्वश्री कुंज देव मनीषी, गुरुकुल आम सेना उड़ीसा, आचार्य जिज्ञासु जी को श्री जितेन्द्र मोहन मेहता स्मृति सम्मान से सम्मानित किया तथा आचार्य सुरेश कुमार जी को श्री लखीराम कटारिया स्मृति सम्मान देकर सम्मानित किया गया। तीनों विद्वानों को 51, हज़ार की राशि, स्मृति चिन्ह भेंट किया गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जी. डी. बक्शी ने संबोधित करते हुए वेदों को सर्वोपरि माना और वेदों से ही भारतीय संस्कृति सभ्यता और संस्कार जीवित हैं की बात कही। वेद हमारी जड़ है, जब तक हम वेदों से जुड़े हुए हैं तब तक हम सुरक्षित हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. पूर्ण सिंह डबास जीने की, मंच संचालन मंत्री मंजीत शास्त्री जी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन समाज के प्रधान श्री धर्मबीर पंवार जी ने किया। - **मन्त्री**

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का सत्पनीक सम्मान करते आर्यसमाज के अधिकारी

गोमाता को राष्ट्रमाता का सम्मान दिलाने की हुंकार - रामलीला मैदान में हुआ विभिन्न संगठनों का संगम

आर्यसमाज ने किया मांग का समर्थन : सभा द्वारा यज्ञ एवं महर्षि दयानन्द कृत गोकरुणानिधि का वितरण

गोमाता की सेवा, संरक्षण और संवर्धन के प्रति समर्पित आर्य समाज वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों में जन्म देने वाली माता की भांति गो को भी माता मानता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने उस समय जब ब्रिटिश हुकूमत थी तब गो रक्षा अभियान चलाया था और इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर हस्ताक्षर भी कराए थे, महर्षि ने गोकरुणानिधि नामक पुस्तक लिखकर मानव समाज को बताया था कि मानव जीवन के पालन-पोषण और रक्षण में गो माता का बहुत बड़ा महत्व है। महर्षि ने मानव समुदाय में गो के प्रति जागरूकता भी फैलाई थी। महर्षि ने प्रथम गोशाला रेवाड़ी में खुलवाई थी। इस तरह अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनमें आर्य समाज ने लगातार गो माता के प्रति समाज को श्रद्धावान बनाया जाता रहा है। अभी पिछले दिनों 20 नवंबर 2023 को गोमाता को राष्ट्र माता घोषित करने की मांग हेतु विभिन्न संगठनों ने विशाल गोष्ठी की। इस अवसर पर गो माता की रक्षा और सम्मान के लिए विशाल आयोजन रामलीला मैदान में किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उसमें विशेष रूप से सहभागिता की गई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से यज्ञ एवं गोकरूणानिधि पुस्तक वितरित की और गोमाता के प्रति सेवा और समर्पण के भाव के लिए लोगों को जागृत किया । इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने शंकराचार्य जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित पुस्तक गोकरुणा निधि भी भेंट की और सभा के सम्वर्धकों ने लगातार यज्ञ किया

आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर दिल्ली में आयोजित वार्षिकोत्सव-2023 का समापन समारोह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वप्रथम 21 युवा दम्पति यजमानों द्वारा भव्य यज्ञानुष्ठान किया गया। ध्वजारोहण सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री कुलबीर सुरजेवाला द्वारा किया गया। पंडित कुलदीप आर्य के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कलकत्ता से पधारे समाजसेवी श्री सज्जन कुमार अग्रवाल ने की।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में युवा वैदिक विद्वान राहुल आर्य, आचार्य अंकुर आर्य, रचित कौशिक, गौतम खट्टर आर्य, डॉ विवेक आर्य ने सारगर्भित अपने अपने विचार साझा किये।

मुख्य अतिथि आचार्य मुनि सत्यजित आर्य ने युवा विद्वानों के लिए विशेष संदेश दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में आचार्य दार्शनेय लोकेश व आचार्य वेदव्रत मीमांसक तथा साध्वी डॉ. उत्तमायति ने अपने आशीर्वचनों से वैदिक के विषय में मार्गदर्शन दिया। श्री सज्जन कुमार अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख किया।

- राजकुमार आर्य, प्रधान

प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया माता राज कोहली जी का स्मृति दिवस

नगर आर्य समाज शाहदरा दिल्ली में विशेष यज्ञ के साथ माता राज कोहली की पुण्य स्मृति 26 नवंबर को प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा श्री महेंद्र भाई ने कहा हमें माताजी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए, प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। माताजी ने अपने जीवन में हजारों बच्चों को यज्ञ करना सिखाया और उन्हें निशुल्क पढ़ाया मृत्यु के दिन भी उन्होंने परिवार के साथ यज्ञ किया उनका जीवन यज्ञमय परोपकार के लिए था। श्री यशोवीर जी ने कहा कोहली परिवार माता जी की स्मृति में यज्ञ कर रहे हैं, यह परिवार बधाई के पात्र है। श्री राजेश धवन निष्ठा कोहली और भव्य सूरी ने भजन सुनाए। महेश भार्गव, रीटा मदान, सुरेश चंद्र अग्रवाल व कामिनी कोहली ने अपने विचार रखें। श्री एमपी गोयल जी के सहयोग से सबको तुलसी का गमला और गंगाजल वितरित किए। बाद में परिवार ने गाजीपुर गौशाला में जाकर गो माता की सेवा भी की। - *मन्त्री*

साप्ताहिक स्वाध्याय

खाण्डव वन

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानन्द से क्रमशः साभार

बहुत पहले ऐतिहासिक काल से पहले, वेद और प्रधानतया वैदिक साहित्य केवल भारत की सीमाओं में परिमित हो चुका था। जो लोग ईरान में बसे या ग्रीस में पहुंचे वे भारतीय आर्यों के बन्धु थे, परन्तु यह विषय यथार्थ इतिहास का होते हुए भी कल्पनात्मक है। .... भारत के धार्मिक परिवर्तनों पर ये चारों आक्रमण बड़ा गहरा असर उत्पन्न करते रहे हैं, परन्तु इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिये कि केवल बाहर के प्रभाव ही भारत के धार्मिक विचारों को हिलाते रहे हैं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर आन्तरिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती रही है। जाति की जरूरत के अनुसार बदले हुए वायुमण्डल के साथ अनुकूलता पैदा करने के लिए या बिगड़े हुए ढांचे को सुधारने के लिए ऐसे सुधारक पैदा होते रहे हैं जो बिगड़ी को बनाने का यत्न करते रहे हैं। यदि भारतवर्ष के धार्मिक परिवर्तनों का इतिहास देखा जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि उसमें आंतरिक प्रतिक्रिया और बाह्य आक्रमण-दोनों का ही प्रभाव है।

प्रकाशक : आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,
सह प्रकाशक - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर प्रकाशित

गतांक से आगे -

परन्तु जो बांधा इस्लाम की गति को रोकने के लिए बन रहे थे, वे हर प्रकार से लाभदायक ही सिद्ध नहीं हुए। उन्होंने शुद्ध हवा का प्रवेश रोक दिया, उन्नति और विकास के लिए गुंजाइश न छोड़ी और धर्म के बलवान् प्रवाह को घेरकर काई, मच्छर और कीचड़ का घर बना दिया। शत्रु के धावे को रोकने के लिए शहर के निवासी चारों ओर खाई खोद लेते हैं, ऊंची दीवार चुन देते हैं। बाहर आना-जाना रुक जाता है। शत्रु अन्दर नहीं आ सकता, परन्तु शहर के निवासी भी बाहर नहीं जा सकते। उन्नति रुक जाती है, खाना-पीना कम हो जाता है। महामारी बढ़ जाती है। यदि कोई नगर अपनी रक्षा भी करना चाहे और महामारी से भी न मरना चाहे तो उसके लिए एक ही मार्ग है कि वह किले से निकलकर शत्रु पर जा टूटे और उसे मार भगाए। दुर्भाग्य से उस समय हिन्दू धर्म में जान नहीं थी। वह आत्म-रक्षा में लगा रहा, इस्लाम पर प्रत्याक्रमण करने का उसने विचार नहीं किया। फल यह हुआ कि घर में महामारी बढ़ गई। 19वीं शताब्दी के मध्य में हम भारत के असली धर्म को जंजीरों से बंधा हुआ, दीवारों से घिरा हुआ और शहतीरों से दबा हुआ पाते हैं।

मुसलमान-काल के अन्तिम भाग में अकबर की उदार धर्म-नीति के प्रभाव में कुछ ऐसे भी यत्न हुए जिनका उद्देश्य धर्म के विश्वरूप को आगे रखकर हिन्दू-मुसलमान के भेद को मिटाना था। भक्त कबीर ऐसे यत्न करनेवालों में से मुख्य थे। कबीर के शिष्य उसके सिद्धान्त का निम्नलिखित शब्दों में वर्णन करते हैं-

सबसे हिलिये सबसे मिलिये,
सबका लीजिये नाउं।
हां जी हां जी सबसे कीजिये,
बसे आपने गाउँ।।

भक्त कबीर के वचनों से ज्ञात होगा कि वह धर्म के व्यापक रूप में भेदों को किस प्रकार तिरोहित करना चाहते थे।

कबीर के शिष्य बुल्ला साहिब ने अपने झूलने में यह कविता लिखी हैं-

जहं आदि न अन्त न मध्य है रे,
जहं अल निरंजन है मेला।
जहं वेद कितेब न भेद है रे,
नहिं हिन्दु तुरक, न गुरू चेला।।
जहं जीवन मरन न हानि है रे,
अगम अपार में जाय खेला।
बुल्ला दास अतीत यों बोलिआ री,
सतगुरु सत शब्द देला।।

मारवाड़ के भक्त दरिया साहिब ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को एक ही पलड़े में डाल दिया है-

मुसलमान हिन्दू कहा,
घट दरसन रंक राव।
जन दरिया निज नाम बिन,
सब पर जम का दाव।।

दूलनदास जी अपने झूलने में कहते हैं-

हिन्दू तुरक दुइ दीन आलम,
आपनी ताकीन में।
यह भी न दूलन खूब है,
करूं ध्यान दशरथनन्द का।।

वही कवि सत्तनाम में वेद के विषय में कहते हैं-

तीन लोक तो वेद बखाना।
चौथ लोक का मर्म न जाना ।।

भक्तराज धरनीदास जी कहते हैं-

एक धनी धन मोरा हो।
जो धन ते जन भए धनी,
बहु हिन्दू तुरक कटोरा हो।
सो धन धरनी सहजहिं पावौं,
केवल सतगुरु के निहोरा हो।।

कबीर तथा अन्य भक्तों का यह यत्न चाहे कितना ही उत्तम था, परन्तु उसमें सफलता नहीं हुई। सफलता न होने का कारण स्पष्ट है। भक्त लोग दो ऐसे धर्मों को मिलाना चाहते थे, जिनके मिलने में दो बड़ी-बड़ी रुकावटें थीं। पहली रुकावट राजनैतिक थी। मुसलमान विजेता थे, हिन्दू विजित थे। जहां एक ओर विजेता विजित के धर्म को तुच्छ मानकर उसके साथ संधि करने को उद्यत नहीं होता, वहां विजित जाति यदि इतिहास और आत्माभिमान रखती हो तो कभी विजेता के धर्म को स्वीकार करने के लिए उद्यत नहीं होती। राजनैतिक पराजय से गए हुए आत्म-सम्मान को वह धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में चौगुने हठ के साथ संभालने का यत्न करती है। कबीर और उसके साथियों की असफलता का दूसरा कारण यह हुआ कि वे ऐसे दो धर्मों को मिलाना चाहते थे, जो मौलिक रूप से भिन्न हैं, जिनकी आधारभूत कल्पनाएं ही अलग-अलग हैं। मिलाने के यत्न निष्फल हुए।

- क्रमशः

पृष्ठ 3 का शेष

में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, भारतीय और विदेशी सब लोग थे। महर्षि ने सबको आर्य बनने और बनाने सन्देश दिया, उन्होंने अपने ग्रन्थों में तथा प्रवचनों में आर्यजाति, आर्यावर्त, आर्यभाषा आदि शब्दों का ही प्रयोग किया, उनका गुजराती, संस्कृत और हिंदी भाषा पर अधिकार था, किन्तु उन्होंने देशी विदेशी भाषाओं को सीखने की प्रेरणा मानव मात्र को प्रदान की। महर्षि का दृष्टिकोण विस्तृत और व्यापक था वे सम्पूर्ण मानवजाति और मानवता के हितैषी और धर्मात्मा महापुरुष थे।

महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रतिभा असाधारण और अलौकिक थी, किंतु उनका सबसे बड़ा वैचारिक आंदोलन विशेष सिद्ध हुआ, उन्होंने मानव समाज में फैल रही कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वासो को दूर करने के लिए लगातार वैचारिक आंदोलन किए, समाज सुधार के लिए प्रत्येक विषय पर सत्य का प्रकाश किया। देश में चाहे आजादी की भावना का सूत्रपात करना हो, देश प्रेम जगाना हो, मनुष्य मात्र को सुपथ दिखाना हो, नारी जाति के ऊपर उनके उपकारो में चाहे विधवा विवाह प्रारंभ करना हो, सती प्रथा को बंद कराना हो, नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाना हो, जातिवाद का भेद मिटाना हो, छुआछूत के रोग को दूर करना हो, अन्याय अनीति का नाश करना हो, उन्होंने बेबाक होकर के मानवता की रक्षा के लिए अपने वैचारिक संकल्पों की साधना की, वैदिक विचारधारा से जनमानस को परिचित कराया, उन्होंने मानव को मानव बनने की प्रेरणा दी और बताया कि वैदिक मान्यताओं को, सिद्धांतों को जानकर और मानकर ही उन पर चलने से मानव का कल्याण होगा। महर्षि दयानंद सरस्वती जी मानवजाति के महान उपकारक एवं परम हितैशी थे, क्षमाशीलता के महान उदाहरण थे, उन्होंने अपने प्राणघातक को दंडित करने व कराने का विचार तक नहीं किया, बल्कि उसे क्षमादान देकर, अभयता का दान देकर उपकृत कर गए, अपने प्रति किए गए बुरे व्यवहार, अपमान, तिरस्कार को सहकर भी वे सदा प्रसन्नता के साथ मुस्कुराए और दूसरों के दुःख को देखकर अपने आंसू नहीं रोक पाए, अपने बड़े से बड़े अपराधी के अपराध से खिन्न होकर भी उन्होंने प्रत्येक को आत्म कल्याण का आशीर्वाद दिया। शक्तिशाली होकर भी उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग किसी को कष्ट देने के लिए नहीं किया, वे दुष्टों को भी सन्मार्ग दिखाते रहे, कल्याण मार्ग चलने की प्रेरणा देते रहे, महर्षि के विचारों, शिक्षाओं को उनके उपदेश, संदेश, आदेश और निर्देशो को अपने जीवन में धारण करने का हम संकल्प लें, आर्य समाज के सेवाकार्यो को आगे बढ़ाएं, आगे बढ़ाते रहें और स्वयं आर्य बनकर संपूर्ण जगत को आर्य बनाने का सफल प्रयास करें, यही महर्षि की 200 वीं जयंती पर कृतज्ञता होगी।

गतांक से आगे - महर्षि दयानन्द जी का 140वें निर्वाण दिवस

आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन पर नव निर्मित मार्मिक, संगीतमय और बहुत ही सुन्दर नाटिका का रुपांतरण तथा मंचन तैयार करवाने में श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अथक प्रयास और विशेष परिश्रम किया है, उनको पीत वस्त्र पहना कर शुभाशीष तथा धन्यवाद प्रदान किया। इस मार्मिक नाटिका को संजीव करने में श्री राजू आर्य, उनकी टीम तथा आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव के ब्रह्मचारियों ने अपना योगदान दिया, बहुत बहुत धन्यवाद।

Initial & Middle Stage of Reform

Continue From Last Issue

On one side there was natural sight of unique Himalayas and Bhagirathi (Ganga), and on the other side there were strange actions of cheating and lack of true knowledge among the people. Does this scene not look strange and hurting? While standing on the Sapta Sarovar if we look towords north, we find so many hills one after the other and so many forests one after the other. Evern the highest peaks of the Himalayas were not visible as they had been hidden under the snow which was shining like the moon. Flow of melted snow passing through valleys, caves and then Haridwar. Water Seems to be like purest Amrit. Its coldness gives feeling golden smell. On one side we come across such heart pleasing scene (right), but on the other side we find disturbed human nature due to selfishness lack of knowledge and being proud. God has created very beautiful nature, but people have made it ugly. Only that part of nature is still beautiful which is out of reach of people. Young Dayanand would have proved stone hearted if he had not reacted against all the misbehaving actions of people.

Swami Dayanand observed Hindu society attending Kumbh fair seriously and found the whole society to be sick of same illness. There were Shaivs, Vaishnavs, Sanyasis and Vairagies, and all looked quite similar in their behavior. In the beginning period of reform he had declared Shaivs better than Vaishnavs, but in the Kumbh fair he found both the religions similar. Neither first religion was completely full of wisdom, nor the 2nd religion was totally unwise. He had created some difference about the two religions but that was washed in pure water of Ganga.

Fame of Swami, who was expert in the Shastras, spread all around in the Kumbha fair. General people and even the Saints started listening to fearless reformer. Some wise persons tried to test Swami Dayanand's ability and were satisfied. First of all he had to have debates with Vishudh-anand ji who had earned name and fame. Debate was related to 'Purush Sookta'. Vishudhanand declared that Brahmans were born from Brahama's month, giving reference of a Sanskrit shloke. Dayanandji corrected him by saying the Shloka meant the Brahmas were like 'the mouth of Brahma' and not 'born from month'. Public might have been greatly impressed by the young Sadhu who defeated the wise Pandit of Kashi.

The fair was over. So many Sadhus and their followers (Shishya) were staying with Swamiji. There was sufficient arrangement for food for all. As per the tradition prevailing at that time, the head of group of Sadhus was required to have sufficient material and articales and ability. Luckily Swamiji also had all the required qualities. Bad condition of Muthadhishes and Mahants pinched Swamiji's heart. He decided that in order to teach Sadhus and Mahants lesson of reducing and lessening articles of comfort, he himself would have to become Sarve Tyagi, that is, do away with all the articles of comfort. He started feeling that the clothes he was wearing were also articles of comfort. So Swami Dayanand, who had left his home, decided to leave every thing.

He distributed all the articles he had, to the beggars. He kept only a copeen with him and gave other things to the poor prople. He sent cloth of wool and Book of Mahabhashy to his guruji's home. In this way Sarva Tyagi Dayanand got rid of worldly bondings and got ready to make the mankind get rid of all the bindings. He performed hard Tapasya on (Sandy) Candi hill across Ganga for some days. Thus he made him ready for strong battle in future. He thought that it was God's will to do all that in his future life.

To be Continue.....

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***संयोजक***

शोक समाचार

श्री विश्वास वर्मा जी को मातृशोक

आर्य समाज यमुना विहार, दिल्ली के मंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री विश्वास वर्मा जी की पूज्य माता श्रीमती शीला वर्मा जी का दिनांक 21 नवम्बर, 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार दोपहर 12 बजे निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ सभा के सम्वर्धकों द्वारा सम्पन्न कराया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 1 दिसम्बर, 2023 को सम्पन्न हुई।

पं. नन्दलाल निर्भय जी को पुत्रशोक

आर्यसमाज के प्रख्यात भजनोपदेशक बहीन निवासी पं. नन्दलाल निर्भय जी के सुपुत्र एवं भजनोपदेशक श्री जयदेव आर्य जी का दिनांक 10 अक्तूबर, 2023 को हृदयाघात के कारण निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 अक्तूबर, 2023 को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 नवम्बर, 2023 से रविवार 3 दिसम्बर, 2023

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 29-30/11-01/12/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 नवम्बर, 2023

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर अमेरिका में आर्य महासम्मेलन

200 YEARS OF MAHARSHI DAYANAND BIRTH
150 YEARS OF ARYA SAMAJ FOUNDATION

INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN
(Largest Global Summit of Arya Samaj Ever, outside India)

HOSTED BY ARYA SAMAJS OF TRI-STATE OF NEW YORK, NEW JERSEY AND CONNECTICUT

July 18-21, 2024 | New York

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक समस्त महानुभाव तत्काल रजिस्ट्रेशन कराएं
https://tinyurl.com/iams2024ny

पंजीकरण या अन्य किसी प्रकार की जानकारी/समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क करें

भारत से जाने वाले
9650183339 अथवा 9311721172

भारत के अतिरिक्त अन्य देशों से जाने वाले
iams2024@aryasamaj.com

STAY TUNED FOR MORE INFORMATION : www.aryasamaj.com

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — **सत्यार्थ प्रकाश** — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	पॉकेट संस्करण
मूल्य ₹60 प्रचारार्थ मूल्य ₹40	मूल्य ₹100 प्रचारार्थ मूल्य ₹60	मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	उपहार संस्करण
मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100	मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120	मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	
250 160	300 200	

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह